विष्णु नागर के व्यंग्य में राजनीतिक चेतना

('देश सेवा का धंधा' एवं 'ईश्वर की कहानियाँ' के विशेष संदर्भ में)

POLITICAL CONSCIOUSNESS IN THE SATIRES OF VISHNU NAGAR

(WITH SPECIAL REFERENCE TO 'DESHSEVA KA DHANDHA' AND 'ISHWAR KI KAHANIYAAN')

एम॰ फिल॰ हिंदी साहित्य की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध सारांश

सत्र : 2016-17

शोध निर्देशक

डॉ. सुनील कुमार

(सहायक प्रोफेसर)

शोधार्थी

मयंक

पंजीयन संख्या : 2016/RCK/215/004

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय

पोस्ट: हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र) भारत

शोध सारांश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय है "**विष्णु नागर के व्यंग्य में राजनीतिक चेतना** (**'देशसेवा का धंधा'** एवं **'ईश्वर की कहानियां'** के विशेष संदर्भ में)। हिंदी साहित्य में व्यंग्य की एक विस्तृत परम्परा रही है| कबीर और भारतेंदु ने सामाजिक विसंगतियों पर दिशायुक्त प्रहार करने की जो परम्परा आरम्भ की थी, उसे हरिशंकर परसाई ने अपने लेखन द्वारा और अधिक सशक्त किया। परसाई ने पहली बारबार व्यंग्य को उसके सही रूप में पहचान दिलाई। यह हरिशंकर परसाई की चेतना संपन्न दृष्टि का परिणाम था कि हिंदी गद्य में सार्थक व्यंग्य लेखन की शुरुआत हुई| बाद में श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी, रवीन्द्र नाथ त्यागी, मनोहर श्याम जोशी, नरेंद्र कोहली, शंकर पुणताम्बेकर, गोपाल चतुर्वेदी और लतीफ़ घोघी आदि ने इसे और अधिक सुदृढ़ किया| इसी परम्परा में विष्णु नागर आज के दौर के प्रमुख व्यंग्यकार हैं। इनके व्यंग्यों को गंभीरतापूर्वक अध्ययन एवं विश्लेषण कर यह पता चलता है कि आज किस तरह राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कुरूपताओं ने हमारे समाज और देश को गर्त में लाकर खड़ा कर दिया है। साथ ही साथ पूँजीवाद, बाजारवाद, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण की नीतियों ने भी हमारी सोच एवं मानसिकता को बुरी तरह प्रभावित किया है। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र वाले देश में भी अप्रत्यक्ष रूप से तानाशाही कायम है, इनके व्यंग्य इन तत्वों का अन्वेषण करते हैं। कुत्सित राजनीति एवं अंध धार्मिकता से आम लोगों एवं देश की जो गति हुई है, इन सबका जीवंत दस्तावेज़ हैं, ये दो व्यंग्य संकलन। साम्प्रदायिकता, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, सता का वर्चस्व जैसे तमाम यथार्थ तथ्यों से ये व्यंग्य मुठभेड़ करते हुए प्रतीत होते हैं।

'रेंक सके तो रेंक', 'डरी हुई जनता', 'भ्रष्टाचार में क्या रखा है', 'वे फिर भी हैं राष्ट्रवादी', 'सावधान साम्प्रदायिकता चालू आहे', 'विकास ही विकास कर तो लें', ये पब्लिक है, ये सब जानती है' और 'आम आदमी' आदि शुद्ध राजनीतिक व्यंग्य हैं, जिनमें सत्ता वर्ग की झूठे आश्वासन, पूंजीपतियों का राजनीति में दखल, व्यवस्था की विद्रूपताएं तथा राजनीतिक षड्यंत्रों का पूर्णतः चित्रण किया गया है। इनकी व्यंग्य कहानियां सीरीज़ धर्म में पैठे अन्धविश्वास, अंधश्रद्धा, और अंधभक्ति को उजागर करती हैं, साथ ही धर्म के आड़ में होने वाले शोषण और भ्रष्टाचार का भी उद्घाटन करती हैं। विष्णु नागर की कहानियां हमारी तीखी विडम्बनाओं के बीच ईश्वर के न होने की कहानियां हैं| इन कहानियों का ईश्वर आदमी द्वारा बनाया गया ईश्वर है, जो आदमी की तरह व्यव्हार करता है और उसके षड्यंत्र का औजार बनाता है| पारम्परिक समाज में ईश्वर के मिथक का जो अमानवीय दुरूपयोग हुआ है, उसे ये व्यंग्य कहानियां अपने तंजिया अंदाज़ में उजागर करती हैं| यहाँ ईश्वर यथास्थितिवादी है क्योंकि बराबरी का सिद्धांत कर्मफल के सिद्धांत के विपरीत है| व्यंग्य का सबसे प्रबल शस्त्र होता है, उसकी भाषा| हरेक रचनाकार की अपनी अलग और विशिष्ट भाषा होती है और उसी भाषा में वह रचना भी करता है| यही भाषा उसकी

रचनाओं की गुणवत्ता और अर्थवत्ता को निखारती है या दबाती है|विष्णु नागर की भाषा अत्यंत सरल, बोधगम्य और संदर्भानुसार है| इन व्यंग्यों की भाषा, कथन शैली एवं अन्य शिल्पगत गुण इतने सरल, सहज और प्रभावी हैं कि व्यंग्य स्वतः ही तीक्ष्ण एवं पैना बन पाठक के मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ते हैं।

तार्किकता और मानवता की धरातल पर व्यंग्य के माध्यम से और अपनी प्रखर राजनीतिक दृष्टि द्वारा समाज में गहरे पैठे उन कुरीतियों,विद्रूपताओं और विसंगतियों का उजागर करते हैं, जो तीव्र गति से प्रतिदिन विस्तारित होती जा रही है| इन्हें प्रस्तुत कर निर्भीकतापूर्वक उन सभी राजनीतिज्ञों, धर्मावलम्बियों और सत्ता के समर्थकों को भी सामने लाते हैं, जो इसमें अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं|